समाज और संत के बीच लोक कल्याण हेतु सेतु बननेवाला महापुण्य का भागी होता है ।

संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

मूल्य : ₹ ५.५०

लोक कल्याण सेतु

रजि. समाचार पत्र

● प्रकाशन दिनांक : १५ सितम्बर २०२६
● वर्ष : ३० ● अंक : ३ (निरंतर अंक : ३५१)
● भाषा : हिन्दी ● पृष्ठ संख्या : २०
(आवरण पृष्ठ सहित)

पूज्य संत
श्री आशारामजी बापू

६ से ११ नवम्बर
दीपावली पर्व

कैसी भी दुःखद अवस्था आये, कितना भी घना अँधेरा हो, सवेरा आता है । कितनी भी कष्टदायी अवस्था हो, घबराओ मत ! ज्ञान के प्रकाश में जियो, आत्मा का कतई कुछ नहीं बिगड़ता ।

– पूज्य बापूजी

जहाँ मौत भी झक मारती है, ऐसी ज्योति को पाने के लिए क्या करें ?

(पूज्य संत श्री आशारामजी बापू के सत्संग से)

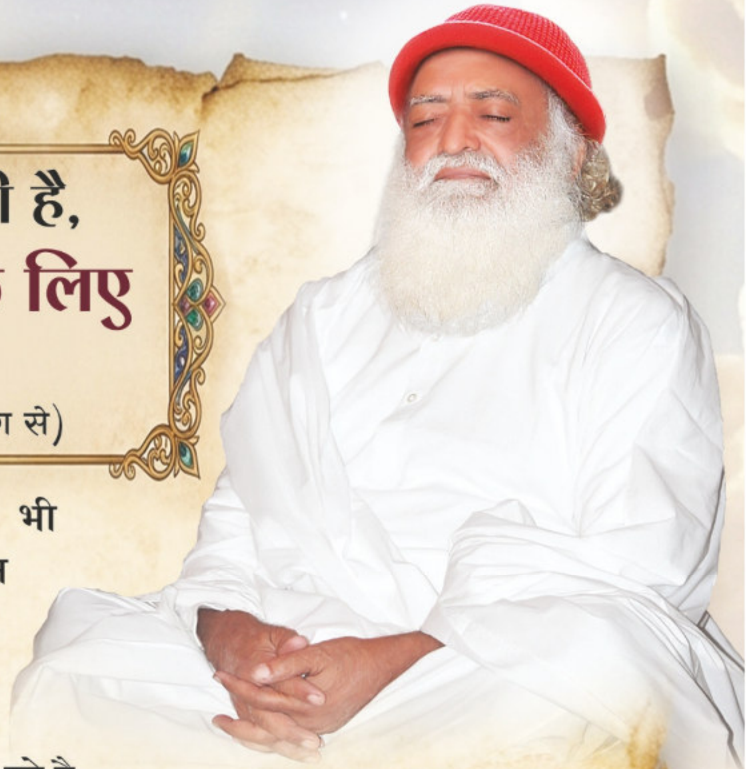

ज्योतिषामपि ज्योतिः - ज्योतियों की भी ज्योति है आत्मा। सब लोग हैं तो आत्मा लेकिन अनात्मा को मैं मानते हैं और जो आत्मा है उसका उनको पता नहीं। रात को सारी इन्द्रियाँ मन में, मन बुद्धि में, बुद्धि जीव में लीन हो जाती है फिर भी नींद का अनुभव करनेवाला जो है वह साक्षी-द्रष्टा चैतन्य तो रहता है, वही आत्मज्योति है। उस आत्मज्योति को देखने के लिए बाहर की ज्योतियों की जरूरत नहीं पड़ती, आत्मज्ञान की जरूरत पड़ती है। और आत्मज्ञान के लिए तड़प होनी चाहिए। तड़प बाकी के दोष निकाल देगी। आत्मज्योति की प्राप्ति हो गयी तो नित्य सुख है, नित्य जीवन है, शाश्वत तत्त्व है। वहाँ मौत भी झक मारती है। मौत की भी वहाँ कुछ दाल नहीं गलती। बाकी तो लोक-लोकपाल भी काल के गाल में चले जाते हैं। आत्मज्योति के आगे काल भी कुछ नहीं, काल भी पानी भरता है।

वह आत्मा अकाल, अमूर्त है। मूर्तिमान जो जगत है वह नहीं, अव्यक्त है वह। वही परमात्मा है। वह है सबमें भरपूर, वही-का-वही और एक है, अखंड है, अद्वैत है। उस आत्मज्योति का ज्ञान होने से जो आत्मा की पूजा कर लेते हैं, आत्म-उपलब्धि कर लेते हैं उनको सब देवताओं को रिझाने की जरूरत नहीं पड़ती, सब अपने-आप रीझे मिलते हैं। ब्रह्मा, विष्णु, महेश को भी रिझाना नहीं पड़ता क्योंकि वे भी आत्मलाभ में जगे हैं इसलिए वे उनको प्रसन्न मिलेंगे। सारे देवी-देवता उनको प्रसन्न मिलेंगे, एक-एक देवता को रिझाना नहीं पड़ता। सारे देवों में जो देवत्व है वह आत्मा का है। उस आत्मज्योति को पाने की तत्परता हो तो बुद्धि सूक्ष्म हो जायेगी। जो उस आत्मज्योति को नहीं पाता है वह बाहर से चाहे कितना भी बड़ा दिखे, अंत में मृत्यु उसको अनाथ बना देती है। आत्मज्योति को जो पा लेता है, वह बाहर से कितना भी छोटा लगे फिर भी ऊँचे-से-ऊँचे पद पर पहुँचता है। **आत्मज्योति, आत्मसिद्धि को पाने के लिए क्या चाहिए ? अदम्भित्व - जीवन में दम्भ नहीं होना चाहिए, अहिंसा, सदाचार, आचार्य-उपासना, गुरुभक्ति, गुरुकृपा पाने की तड़प और साधन में तत्परता - ऐसे सद्गुण अगर आ जायें तो सद्गुरु की कृपा से वह आत्मसिद्धि पा लेता है।** और ये सद्गुण नहीं आये तो दुनिया का सब कुछ मिल जाय, कितनी भी अकल आ जाय, बाहर से भले कितना भी बड़ा दिखे, मृत्यु का झटका उसको लाचार बना देगा। फिर किसीके गर्भ में भटकेगा वह। आत्मज्योति का अनुभव हो गया तो मृत्यु शरीर पर उतरेगी लेकिन आप आत्मा-परमात्मा के स्व-स्वभाव में शाश्वत रहेंगे।

अलौकिक दिवाली मनाकर शाश्वत आनंद पाओ

वास्तविक दृष्टि मिल जाय, वास्तविक समझ आ जाय तो फिर एक दिन की ही दिवाली नहीं, एक सप्ताह के लिए ही दिवाली की खुशियाँ नहीं, एक महीने के लिए ही दिवाली का आनंद नहीं अपितु वर्षभर दिवाली का आनंद... ना-ना, जीवनभर दिवाली का आनंद... ना-ना, मरने के बाद भी दिवाली का आनंद बना रहता है - दिवाली के आनंद सहित ब्रह्मानंद।

दीपावली : ६ से ११ नवम्बर

६ से ११ नवम्बर तक दीपावली पर्व है। जीवन में सदा दिवाली कैसे बनी रहे इसके बारे में पूज्य बापूजी के सत्संग-वचनामृत में आता है :

दिवाली आयी तो लोगों ने घर का कूड़ा-कचरा बाहर निकाल दिया, घर साफ-सुथरा कर दिया। अपने घर में नयी चीजें लायीं, रोशनी की और मुख मधुर किया। क्योंकि सारी सृष्टि का मूल कारण चैतन्य राम मधुर है। उस मधुर परमात्मा का विस्तार भी मधुर है। वासना, अज्ञान के कारण दुःखद लगता है लेकिन जब निर्वासनिक नारायण की शांति में, निर्वासनिक निरंजन राम में मन रमने लगता है तो सब मधुर-मधुर ही हो जाता है।

पृथ्वी मधुमयं जलं मधुमयं तेजः मधुमयं वायुः मधुमयं आकाशः मधुमयं प्रकृतिः मधुमयं परब्रह्म-परमात्मा मधुमयम्।

दिवाली माने जीवन में खुशियाँ, प्रकाश, नयी दृष्टि, नयी चीज ! सुख में सुखी, दुःख में दुःखी होना, लोभ, काम, क्रोध, मोह - यह तो जीव का

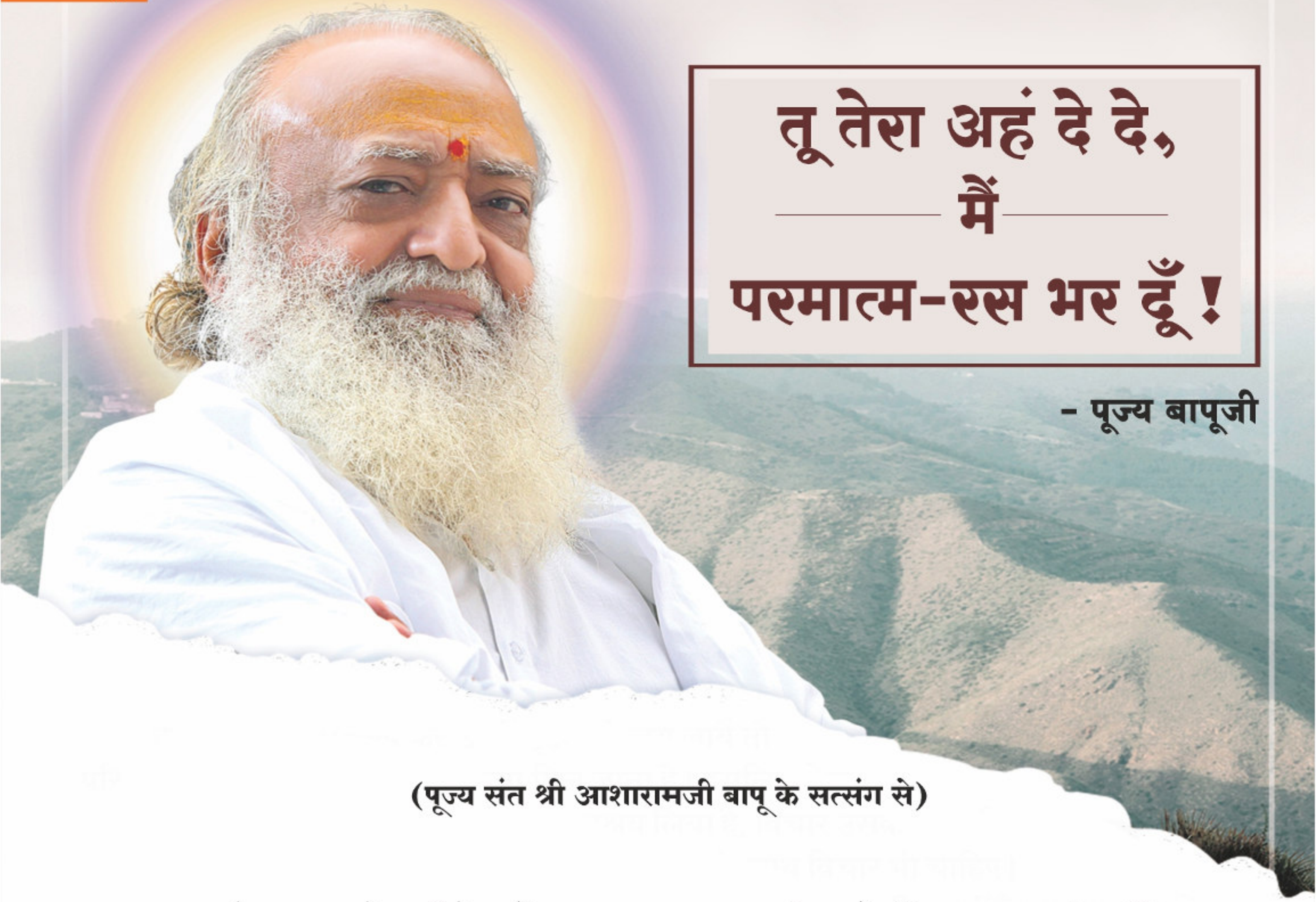

तू तेरा अहं दे दे, मैं परमात्म-रस भर दूँ !

– पूज्य बापूजी

(पूज्य संत श्री आशारामजी बापू के सत्संग से)

एक बड़ा सेठ था । देश-विदेश में उसका कारोबार था । अपने को बुद्धिमान मानता था, बुद्धिमान था भी । कथा में भी जाता था, नौकर-चाकरों को भी ले जाता था लेकिन सेठ को दीक्षा नहीं मिली थी, निगुरा था ।

निगुरे का नहीं कहीं ठिकाना,
चौरासी में आना जाना ।
पड़े नरक की खान निगुरे नहीं रहना ।
सुन लो चतुर सुजान निगुरे नहीं रहना ।

सेठ अपना प्रभाव दिखाने और अपने नाम की प्रसिद्धि के लिए महात्माओं के पास जाता था । एक बार किसी अलमस्त महात्मा के यहाँ पहुँचा । बोला : ''बाबाजी ! मेरा विदेश में ऐसा है, न्यूयॉर्क में यह है... परंतु सत्संग में सुना है कि यह सब संसार है, सपना है, किसी काम का नहीं है, मिथ्या है । फिर भी मन बार-बार उधर ही जाता है, भगवान में लगता नहीं । शरीर मरनेवाला है, जलनेवाला है, मैं जानता हूँ, समझता भी हूँ पर भौतिक जीवन की सुख-सुविधाओं की आदत छूटती नहीं । कृपया मेरी मदद कीजिये ।''

बाबा ने देखा, 'चलो, इस बंदे को ईश्वर का स्वाद दे देवें ।' भक्त बैठे थे । भजन गाने-बजानेवाले भी साथ में बैठे थे । बाबा ने उनको इशारा किया कीर्तन के लिए ।

कीर्तन, साज चल पड़े और भगवन्नाम की मधुर ध्वनि चालू हुई । मुनीम थोड़ा हिलने लगा, उसके नौकर-चाकर और भगत थोड़े-थोड़े हिलने लगे । कभी कोई गद्‌गद होने लगा, कभी किसीको हास्य आ जाय, कभी किसीको भाव और रुदन हो जाय...

श्रीकृष्ण उद्धव से कहते हैं :

वाग् गद्‌गदा द्रवते यस्य चित्तं
रुदत्यभीक्ष्णं हसति क्वचिच्च ।
विलज्ज उद्‌गायति नृत्यते च
मद्‌भक्तियुक्तो भुवनं पुनाति ॥

(श्रीमद्‌भागवत : ११.१४.२४)

साधु-संगति

भवसागर से तारण का

सर्वोत्तम उपाय

(योगवासिष्ठ महारामायण : मुमुक्षु-व्यवहार प्रकरण, सोलहवाँ सर्ग)

हे रामचन्द्रजी ! आप साधु-समागम को बुद्धि को अत्यंत बढ़ानेवाला, अज्ञानरूपी वृक्ष का उच्छेद करनेवाला और मानसिक व्यथाओं को दूर करनेवाला जानिये। जैसे उद्यान को सींचने से फल-फूलों के गुच्छे प्राप्त होते हैं वैसे ही साधु-संगम से मनोहर और निर्मल विवेकरूपी परम दीप उत्पन्न होता है।

....

मोक्ष के चार द्वारपाल कहे गये हैं : शम, विचार, संतोष और साधु-समागम । इनमें से साधु-समागमरूप चतुर्थ द्वारपाल का वर्णन करते हुए श्री वसिष्ठजी कहते हैं :

''हे महामते ! इस लोक में श्रेष्ठ साधु-समागम मनुष्यों के संसार-सागर से तरने में विशेष रूप से सब जगहों में (सम्पूर्ण अवस्थाओं में) उपकार करता है । साधु-संगतिरूपी वृक्ष के उत्पन्न हुए विवेकरूपी सफेद फूल की जो महात्मा रक्षा करते हैं वे मोक्षफलरूप सम्पत्ति के भाजन होते हैं । साधुपुरुषों का समागम होने पर आत्मीयजन और धन से शून्य दुःखपूर्ण स्थान धन और जन से परिपूर्ण हो जाता है, मृत्यु भी उत्सव में परिणत हो जाती है और आपत्तियाँ सम्पत्तियों की तरह मालूम होती हैं । इस संसार में आपत्तिरूपी कमलिनी के लिए हेमंत ऋतु रूप और मोहरूपी कुहरे के लिए वायुरूप केवल श्रेष्ठ साधु-समागम ही सर्वोत्कृष्ट है । हे रामचन्द्रजी ! आप साधु-समागम को बुद्धि को अत्यंत बढ़ानेवाला, अज्ञानरूपी वृक्ष का उच्छेद करनेवाला और मानसिक व्यथाओं को दूर करनेवाला जानिये । जैसे उद्यान को सींचने से फल-फूलों के गुच्छे प्राप्त होते हैं वैसे ही साधु-संगम से मनोहर और निर्मल विवेकरूपी परम दीप उत्पन्न होता है । साधु-संगतिरूपी विभूतियाँ नित्य बढ़नेवाले, अविनाशी और बाधरहित उत्तम सुख को देती हैं। कितनी ही बड़ी आपत्ति को क्यों न प्राप्त हों और कितनी ही बड़ी पराधीनता को क्यों न प्राप्त हों, फिर भी मनुष्यों को क्षणभर के

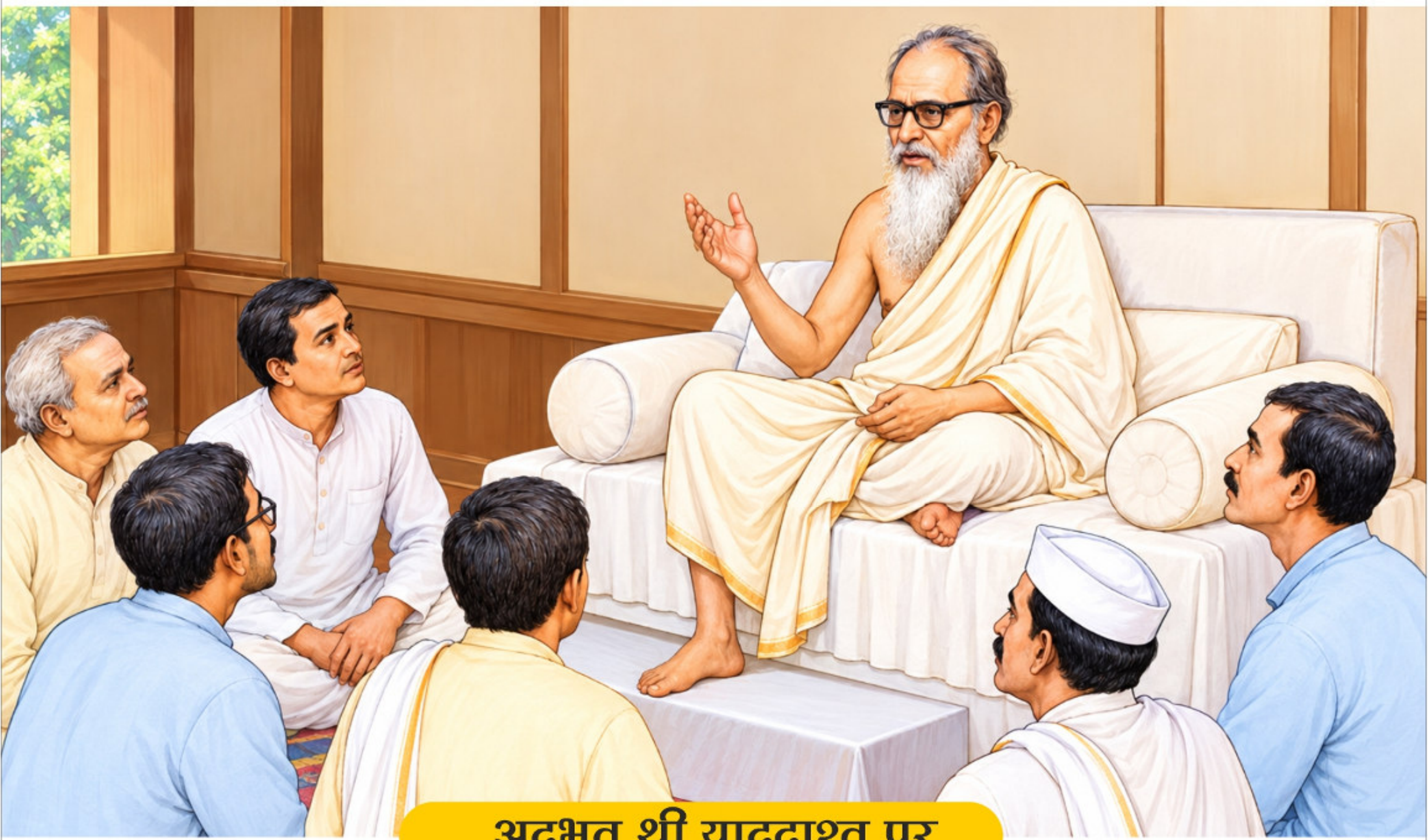

अद्‌भुत थी याददाश्त पर

विनोबाजी हुए नाराज

सब झुलसते रहते हैं - कोई किसी अग्नि में, कोई किसी अग्नि में, कोई किसी आकांक्षा में, कोई किसी आकांक्षा में... क्यों ? क्योंकि ब्रह्मभाव नहीं प्राप्त हुआ, परा भक्ति का रस नहीं मिला। परा भक्ति की तरफ वृत्ति को नहीं लगाया, ऐसे संग में नहीं गये जहाँ से परम शांति मिले। अतः सत्पुरुषों की संगति में जाकर ब्रह्मभाव एवं परा भक्ति की प्राप्ति की यात्रा करनी चाहिए।

(पूज्य संत श्री आशारामजी बापू के सत्संग से)

अक्षर साधक को परिस्थितियाँ और संसार मिथ्या समझ में आ जाय अथवा पूरा भगवन्मय समझ में आ जाय अथवा प्रकृति का विलास समझ में आ जाय तो उसकी वृत्ति अपने स्वरूप में, अपने परमात्मा में स्थिर होती है, उसका ज्ञान पुष्ट हो जाता है।

एक बार आचार्य विनोबा भावे के पास भक्तों ने बात रखी कि "अमुक व्यक्ति की स्मृति बड़ी जोरदार है। ऐसी स्मृति है कि वह किसीके घर, किसीके आश्रम या किसी भी जगह पर जाता है तो एक बार दृष्टि घुमा लेता है और उसको सब याद रह जाता है। टेबल कहाँ पड़ा है, कौन-सी दीवाल पर क्या चित्र लगा है, फाउंटेन पेन कहाँ पड़ा है, गिलास कहाँ है, लोटा कहाँ है - यह सब उसकी

२५-४०-५० साल के बूढ़ों को

८४ साल के जवान की चुनौती

ब्रह्मलीन पूज्यपाद भगवत्पाद साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज का महानिर्वाण दिवस : १८ नवम्बर

मनुष्य जितना संसार की चीजों को तेजी से भोगता है उतना जल्दी उसके जीवन का सत्यानाश हो जाता है। जितना संयम से रहता है उतना उन्नत होता है और जितना भगवत्प्रसाद का भोग भोगता है उतना महान बन जाता है। आत्मसुख निरापद सुख है और संसार का भोग दुःखभरा, काँटों का मार्ग है।

....

१८ नवम्बर को पूज्य संत श्री आशारामजी बापू के सद्गुरुदेव ब्रह्मलीन पूज्यपाद भगवत्पाद साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज का महानिर्वाण दिवस है। उनका जीवन स्वयं में एक जीवंत शास्त्र था, जिसने अनगिनत साधकों को सत्यस्वरूप परमात्मा के मार्ग पर अग्रसर किया। उन्हींकी कृपा से पूज्य संत श्री आशारामजी बापू ने ब्रह्म-साक्षात्कार किया और सम्पूर्ण विश्व ने बापूजी के द्वारा उस दिव्य ज्ञान व प्रेम प्रसाद का लाभ पाया। साँईं श्री लीलाशाहजी के जीवन की एक घटना के बारे में पूज्य बापूजी के सत्संग में आता है :

मनुष्य जितना संसार की चीजों को तेजी से भोगता है उतना जल्दी उसके जीवन का सत्यानाश हो जाता है। जितना संयम से रहता है उतना उन्नत होता है और जितना भगवत्प्रसाद का भोग भोगता है उतना महान बन जाता है। आत्मसुख निरापद सुख है और संसार का भोग दुःखभरा, काँटों का मार्ग है। व्यक्ति जितना तेजी से व जोर से काँटों पर उछलता है उतना ही शूल ज्यादा चुभते हैं। प्रेमी-प्रेमिका को देखो, जल्दी ही आपस में लड़ेंगे-झगड़ेंगे क्योंकि तेजी से संसारी भोगों में गिरे। एकादशी के दिन, पूनम के दिन भी संयम नहीं, युवती मायके जाय नहीं, फिर क्या होना है... एकदम ढाँचे बैठ गये (गाल पिचक गये)

विदेशियों ने व्यक्त किया

हिन्दू धर्म के प्रति अपना प्रेम

''हिन्दू धर्म में सर्वोच्च आध्यात्मिक शिक्षाएँ हैं कारण कि यह हठधर्मिता पर नहीं, परम सत्य की प्रत्यक्ष अनुभूति पर आधारित है। हिन्दू धर्म के अनुसार जो कुछ भी अस्तित्व में है, सबका एक परम अनंत स्रोत है। जबकि अन्य आस्था-प्रणालियाँ खंडित हैं - वे एक सीमा पर पहुँच के अटकी हुई हैं यह सोचकर कि केवल उनका मार्ग ही एकमात्र सही मार्ग है।

आत्मीयता, दूसरों की निःस्वार्थ भलाई, निर्दोष प्रेम, परस्पर सौहार्द - ये उदात्त सद्भावनाएँ सभीको आनंदित-उल्लसित करती हैं । ऐसा इसलिए है कि कल्याणस्वरूप, प्रेमस्वरूप परमात्मा जीवमात्र के अंतरात्मा हैं और जीवात्मा तथा परमात्मा का स्वभाव अभिन्न है । सनातन धर्म हमारे भीतर छिपे भगवदीय अंश को विकसित करने की अद्वितीय पद्धति सिखाता है। यही कारण है कि जो कोई भी हमारे ग्रंथों का अध्ययन करता है वह बरबस कह उठता है कि यह ज्ञान अलौकिक है।

सर्दियों में बल-पुष्टि के लिए उत्तम खुराक : चना

उबले हुए अथवा भुने काले चने शीतल, रुक्ष, पचने में हलके, कफ-पित्तशामक, वातकारक तथा रक्त-विकार एवं बुखार को मिटानेवाले हैं। कफजन्य रोगों में, कफ-प्रकृतिवाले तथा मोटे व्यक्तियों व युवकों के लिए तथा वसंत ऋतु में ये विशेष रूप से सेवनीय हैं।

द्विदल धान्यों (दालों) में प्रत्येक के अपने विशिष्ट गुण हैं। मूँग सुपाच्य है, उड़द शुक्रवर्धक है, राजमा रुचि बढ़ानेवाला और चना बलवर्धक है। छिलकेरहित चने की तुलना में छिलकेसहित चना खनिज द्रव्यों (minerals) से भरपूर होने के कारण विशेष रूप से पौष्टिक होता है।

आयुर्वेद की दृष्टि से

उबले हुए अथवा भुने काले चने शीतल, रुक्ष, पचने में हलके, कफ-पित्तशामक, वातकारक तथा रक्त-विकार एवं बुखार को मिटानेवाले हैं। कफजन्य रोगों में, कफ-प्रकृतिवाले तथा मोटे व्यक्तियों व युवकों के लिए तथा वसंत ऋतु में ये विशेष रूप से सेवनीय हैं। रक्त-विकारनाशक होने से रक्तपित्त, पीलिया तथा पित्तप्रकोपजन्य समस्याओं में एवं विभिन्न प्रकार के त्वचा-रोगों में भी ये हितकारी हैं।

मूर्ख की मित्रता, मौत को निमंत्रण

- पूज्य बापूजी

एक कहावत है : मूर्ख मित्र से समझदार दुश्मन अच्छा होता है । मूर्ख मित्र न जाने कब आपको मुसीबत में डाल दे ।

पंचतंत्र ग्रंथ में इस प्रकार की कथा आती है कि एक राजा जंगल में शिकार खेलने गया । वहाँ पूर्वजन्म का उसका मित्र मिला जो रीछ योनि में भटक रहा था । एक-दूसरे का परिचय हुआ । राजा को रीछ मित्र ने कहा : ''मैं आपका मित्र हूँ । आपकी मनुष्य जितनी सेवा करेंगे उससे ज्यादा मैं सेवा कर सकता हूँ । और मेरे को देखकर कोई नजदीक आयेगा ही नहीं । मैं आपका अंगरक्षक हो जाऊँ ?''

राजा यह सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ और बोला : ''ठीक है । मैं तुम्हें अपने साथ राजमहल में ले जाऊँगा ।''

रीछ राजा के साथ राजमहल में आकर उसका अंगरक्षक बन के रहने लगा । राजा जब शयन करता तो रीछ चौकी करता था ।

भादों का महीना था । एक दिन राजा दोपहर का भोजन करके सो गया । राजा ने खूब सीरा-पूड़ी, खीर खायी होगी । उसके होंठों पर थोड़ी मिठास या लार बाहर निकली तो उसके मुँह के पास मक्खियाँ आकर भिनभिनाने लगीं और मुँह पर बैठ गयीं । रीछ को हुआ कि 'मेरा मित्र सो रहा है और ये मक्खियाँ उसकी नींद खराब कर रही हैं ।' वह बार-बार झपट्टा मारे । मक्खियाँ उड़ जायें फिर आकर बैठें । फिर यह उड़ाये फिर आकर बैठें । कई बार ऐसा होता रहा तो रीछ ने सोचा : 'तुम समझती क्या हो ?' राजा की तलवार टँगी हुई थी । रीछ ने दोनों हाथों में तलवार पकड़ी और दो पैरों पर खड़ा हो गया । मक्खियाँ ज्यों बैठीं, इसने धड़ाक-धूम... तलवार दे मारी । मक्खियाँ तो पहले ही उड़ गयीं परंतु राजा की गर्दन कटकर दूर चली गयी ।

सेवा करने में अक्ल की जरूरत पड़ती है । अक्ल बिना का जो बल है वह सेवा के बदले मुसीबत पैदा कर देता है । रीछ राजा की सेवा करना चाहता था परंतु राजा के लिए मुसीबत पैदा कर दी, उसको मृत्यु के घाट उतार दिया । ऐसे ही हमारा मन है । मनरूपी मित्र इस जीवरूपी राजा की सेवा करे लेकिन मनरूपी मित्र को अगर सत्संग की अक्ल नहीं है तो यह मन ऐसी सेवा करता है कि जीवात्मा की हत्या हो जाती है । जीवात्मा अपने परमात्म-पद को नहीं पाता और बार-बार मरता-जन्मता रहता है । इसलिए मनरूपी मित्र को, मनरूपी मंत्री को सत्संग, साधन-भजन के द्वारा सुयोग्य बनाना चाहिए ।

अमृत तुल्य आँवलों से बने उत्पाद

आँवला कैंडी

पूरे परिवार के उत्तम स्वास्थ्य के लिए

₹ १०० ४०० ग्राम

आँवला पाउडर

बल, आयु-आरोग्य व वीर्य वर्धक

₹ ६० २०० ग्राम

आँवला रस

दीर्घायु व यौवन प्रदाता, विविध रोगों में लाभदायी

₹ ७५ ७०० मि.ली.

आँवला मिश्री चूर्ण

ऊर्जावर्धक, शक्तिदायक, धातुरक्षक व पौष्टिकता से पूर्ण

₹ ६० ४०० ग्राम

पान-गुलाब-आँवला शरबत

यह शीतल, मधुर शरबत स्वास्थ्यकर तो है ही, साथ ही सुगंधित और स्वादिष्ट भी है । यह भूख और पाचनशक्ति बढ़ाता है, पित्त और वात का शमन करता है । आंतरिक गर्मी, जलन, प्यास की अधिकता को दूर कर शक्ति और स्फूर्ति देता है ।

₹ ९५ ९४० ग्राम

चिरयौवन, दीर्घायुष्य प्रदायक व मातृ-दुग्धवर्धक

शतावरी चूर्ण

यह वीर्य, बुद्धि व रोगप्रतिकारक शक्ति वर्धक, चिरयौवन व दीर्घायुष्य दायक, वजन-वृद्धिकर तथा नेत्र एवं हृदय हेतु हितकर श्रेष्ठ औषधि है । यह वीर्य-संबंधी बीमारियों, अत्यधिक मासिक स्राव, वंध्यत्व आदि में लाभदायी है ।

₹ ६० ७५ ग्राम

लीवर टॉनिक

सिरप व टेबलेट

सभी प्रकार के यकृत-विकार (liver disorders), खून की कमी, पीलिया, रक्त-विकार, कमजोरी, भूख न लगना, अरुचि, कब्ज, पेटदर्द तथा गैस में अत्यधिक लाभप्रद ।

₹ ८० ४० ग्राम

₹ ३५ १३० ग्राम

स्वच्छ और मजबूत दाँतों व स्वस्थ मसूड़ों के लिए असरकारक औषधियाँ

इन औषधियों से पायें अनेक लाभ

* दाँतों और मसूड़ों के दर्द को दूर कर उन्हें बनायें मजबूत ।
* दाँतों का हिलना, उनमें कीड़े लगना, छिद्र होना, मैल जमना, सड़न होना, खून निकलना आदि में लाभदायी ।
* मसूड़ों में सूजन, पीप निकलना, मुँह से दुर्गंध आना, मुँह के छाले तथा जिह्वा, तालू और होंठों के सभी रोगों में लाभदायी ।

₹ ५० १०० ग्राम

₹ ४० १०० ग्राम

₹ १५ ३० मि.ली.

उपरोक्त सामग्री संत श्री आशारामजी आश्रमों में सत्साहित्य सेवा केन्द्रों से तथा समितियों से प्राप्त हो सकती है । अन्य उत्पादों व उनके लाभ आदि की विस्तृत जानकारी के लिए एवं घर बैठे रजिस्टर्ड पार्सल द्वारा सामग्रीप्राप्ति हेतु गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड करें : "Ashram eStore" App या विजिट करें : www.ashramestore.com या सम्पर्क करें : ७३५९१९३७५२. ई-मेल : contact@ashramestore.com

पूज्य बापूजी के 'वसुधैव कुटुम्बकम्' संदेश को चरितार्थ करता महिला उत्थान मंडल

RNI No. 66693/97
RNP No. GAMC-1253-A/2024-2026
Issued by SSPO's-Ahmedabad City Dn.
Valid up-to 31-12-2026
WPP No. 02/24-26
(Issued by CPMG UK. valid up-to 31-12-2026)
Posting at Dehradun G.P.O. between 18th to 25th of every month.
Publishing on 15th of every month

स्वतंत्रता दिवस पर युवा सेवा संघ ने दिया देशभक्ति व सतपथ पर चलने का संदेश

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/seva देखें। आश्रम, समितियाँ एवं साधक-परिवार अपने सेवाकार्यों की तस्वीरें sewa@ashram.org पर ई-मेल करें।

पूज्य बापूजी की पावन प्रेरणा से दीपावली के पावन पर्व पर अहमदाबाद आश्रम के पवित्र, आध्यात्मिक वातावरण में

दीपावली अनुष्ठान शिविर ८ से १४ नवम्बर

साधकों व विद्यार्थियों के लिए सुनहरा अवसर !

✲ सम्पर्क : संत श्री आशारामजी आश्रम, अहमदाबाद। दूरभाष : (०७९) ६१२१०८८८/७४९/७५०/७३१, ७६००३२५६६६ ✲ ट्रेन के आरक्षण शुरू हो चुके हैं, जल्द ही टिकट बुक करायें।

आश्रम के मासिक प्रकाशन की सदस्यता हेतु स्कैन करें : Lok Kalyan Setu लोक कल्याण सेतु Rishi Prasad ऋषि प्रसाद Rishi Darshan ऋषि दर्शन

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम **प्रकाशक** : राकेशसिंह आर. चंदेल **मुद्रक** : विवेक सिंह चौहान **प्रकाशन-स्थल** : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात) **मुद्रण-स्थल** : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.)-१७३०२५ **सम्पादक** : रणवीर सिंह चौधरी